बिहार दिवस पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 21 मार्च 2024, गुरुवार	**समय : 5.30 PM**	**स्थान : श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र**

- मंचासीन महानुभावों तथा
- उपस्थित देवियों और सज्जनों !

नमस्कार,

सबसे पहले, बिहार दिवस के अवसर पर, आप सभी को मेरा हार्दिक अभिनंदन और बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

1. आप सब जानते हैं कि "बिहार" हमारे देश का एक बड़ा प्रदेश है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह हमारे देश का एक सम्पन्न और समृद्ध प्रदेश रहा है। बिहार में एक गौरवशाली अतीत और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। यहां के मेहनती और प्रतिभाशाली लोगों ने देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

2. आज बिहार के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरव-बोध का पावन दिन है। हम सब जानते हैं कि आज से लगभग 112 साल पहले, यानी 22 मार्च, 1912 को बिहार एक अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आया और आजादी के बाद 26 जनवरी, 1950 को बिहार को राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ।

3. मैं मानता हूँ कि बिहार की गौरवशाली यात्रा महज 112 साल पुरानी नहीं है। इसका अतीत हजारों वर्षों से बेहद समृद्ध रहा है। बिहार ने देश-दुनिया को शताब्दियों से रास्ता दिखाया है। कई मोर्चे पर अब भी दिखा रहा है और आगे भी दिखाता रहेगा।

पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी ने बिहार की आत्मा में झांककर देखते हुए कहा था कि बिहार की शिक्षा की स्थिति में अगर सुधार आ जाए तो भारत का नेतृत्व फिर से बिहार ही करेगा। कलाम के शब्दों को देशभर में फैली इस प्रदेश की मेधा से जोड़कर देखा जा सकता है।

4. विदेहराज जनक से लेकर सम्राट अशोक तक की परंपरा का साक्षी

वैदिक और पौराणिक काल से बिहार अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक वैभव के लिए प्रसिद्ध रहा है। विदेहराज जनक, महर्षि विश्वामित्र, महान नीतिज्ञ चाणक्य, सम्राट चन्द्रगुप्त एवं सम्राट अशोक की यह गौरवशाली भूमि है। महान विद्वानों, तत्व-चिंतकों एवं दार्शनिकों का संबंध बिहार से रहा है। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक दृष्टि से भी यह भूमि अत्यंत वैभवशाली रही है।

धार्मिक रूप में भी बिहार की विशिष्ट पहचान रही है। यह भूमि जगतजननी मां जानकी, महात्मा बुद्ध, तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी और गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज की पावन धरती है। यहां सूफी संतों की वाणी भी गूंजी है, जिससे धार्मिक सद्भावना और सामाजिक बंधुता विकसित होने के सुअवसर मिले हैं।

5. **बिहार शिक्षा का सर्वप्रमुख केन्द्र रहा**

एक समय बिहार शिक्षा के सर्वप्रमुख केन्द्रों में गिना जाता था। नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय और ओदंतपुरी विश्वविद्यालय प्राचीन बिहार के गौरवशाली अध्ययन केंद्र थे। 12वीं शताब्दी के बाद नालंदा विश्वविद्यालय के साथ तोड़-फोड़ कर नुकसान पहुंचाया गया। इस स्थान के खंडहर हो जाने के बावजूद साल 2016 में इस स्थान को यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज में शामिल किया गया।

चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इस क्षेत्र की यात्रा की और इसकी गौरवशाली सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा का उल्लेख अपने यात्रा-वृत्तांत में किया। विश्व के महान एवं श्रेष्ठ गणितज्ञ आर्यभट्ट बिहार के ही थे।

6. **स्वतंत्रता संग्राम में बिहार ने बढ़-चढ़कर निभाई भूमिका**

बिहार स्वतंत्रता-संग्राम के अप्रतिम योद्धा बाबू वीर कुंवर सिंह जी की भी जन्मभूमि है। आजादी की लड़ाई में उनके नेतृत्व में बिहारवासियों ने अग्रणी भूमिका निभाई। हजारों लोगों ने अपने प्राण न्योछावर किये।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बिहार का चंपारण सत्याग्रह को अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह के अग्रगण्य घटनाओं में से एक गिना जाता है। यह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का देश में पहला सत्याग्रह था, जिसने पूरे देश में अंग्रेजी हुतुमत के खिलाफ बगावत की जबर्दस्त लहर पैदा कर दी।

भारतीय गणतंत्र के पहले राष्ट्रपति एवं स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बिहार के गौरव हैं। राजेंद्र बाबू का देश के संविधान के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस भूमिपुत्र ने आधी शताब्दी तक अपनी मातृभूमि की सेवा की।

बिहार की पावन धरती लोकनायक जयप्रकाश नारायण, मौलाना मजहरूल हक, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, डॉ. श्रीकृष्ण सिंह, बाबू अनुग्रह नारायण सिंह एवं जननायक कर्पूरी ठाकुर जैसी अनगिनत विभूतियों की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि रही है।

7. **दशरथ मांझी और विद्यापति की विरासत**

कई वर्षों तक लगातार पर्वत काटकर लोक-कल्याण के लिए सहज और सुगम मार्ग बनाने वाले 'माउंटेन मैन' (पर्वत-पुरूष) के नाम से विख्यात स्व. दशरथ मांझी की यह भूमि परम वंदनीय है।

कला, संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में बिहार का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा है। आदिकवि वाल्मीकि और कवि-कोकिल विद्यापति बिहार के ही सपूत हैं। अनगिनत महान बिहारी साहित्यक-सांस्कृतिक विभूतियां मां भारती के भव्य मंदिर का अनुपम शृंगार हैं।

8. देश की एकता और अखंडता की भावना की मजबूती के लिए हर प्रदेश में इस तरह का "राज्य दिवस" मनाना, अपने आप में महत्वपूर्ण है। मुझे विश्वास है कि इस प्रकार के कार्यक्रम से देश के सभी राज्यों के बीच पारस्परिक सद्भाव और बंधुत्व की भावना और अधिक सुदृढ़ होगी।

9. हमारा भारत विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता वाला देश है। यही कारण है कि संपूर्ण विश्व ने हमें ज्ञान एवं संसाधन की भूमि के रूप में देखा है। इसलिए इस महान देश का नागरिक होना बहुत ही गर्व व सौभाग्य की बात है।
10. भारत 28 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों का एक संघ है, जिसकी अपनी अनूठी संस्कृति और परंपरा है जो देश की विविधता को जोड़ती है। इन विविधताओं के बावजूद, देश सांस्कृतिक रूप से एक है, यही हमारी ताकत है, यही हमारी पहचान है।
11. मैं समझता हूँ कि इस प्रकार से विभिन्न प्रदेशों के स्थापना दिवस मनाने से राष्ट्रीय एकता और भाईचारे को एक नया आयाम भी मिलेगा। देश के अलग-अलग राज्यों के बीच आत्मीयता बढ़ेगी। आजादी के इस अमृत काल में यह कार्यक्रम निश्चित रूप से राष्ट्र के विकास की नींव को मजबूत करेगा - यह मेरा पूर्ण विश्वास है।

12. हम सब यह जानते हैं कि 'राज्य दिवस' के आयोजन का मुख्य उद्देश्य आम जनता में अपनी संस्कृति, जीवंत परम्परा एवं अपने महापुरूषों के प्रति सम्मान तथा कृतज्ञता का भाव जगाना होता है। इनसे भावी जीवन के लिए प्रेरणा भी मिलती है।

    ऐसे अवसर पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने राज्य को विकसित राज्य के रूप में प्रतिष्ठित करेंगे और इसके नव-निर्माण में भरपूर योगदान देंगे।

13. मैं 'बिहार दिवस' के पावन अवसर पर, असम में रहने वाले सभी वर्गों के लोगों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं तथा देश की समग्र प्रगति की मंगलकामना करता हूं।

    जय हिंद !

    जय भारत !!